कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा, दिल्ली

''प्राकृतिक खेती'' विषय पर एक-दिवसीय कृषक जागरुकता कार्यक्रम

दिनांक 28 मई, 2024 को कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा, दिल्ली के द्वारा ''प्राकृतिक खेती'' विषय पर एक दिवसीय कृषक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. जे.पी. मिश्रा, माननीय निदेशक, भा.कृ.अनु.प. - कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-2, जोधपुर, राजस्थान एवं डॉ. बृजेन्द्र सिंह, माननीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली उपस्थित हुए। कार्यक्रम के शुरुआत में डॉ. डी.के. राणा, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, दिल्ली ने उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों, किसान एवं महिला किसान, उधमी एवं मिडिया के प्रतिनिधियों का हार्दिक अभिनंदन किया एवं साथ में उन्होनें भारत सरकार की महत्वाकांक्षी प्राकृतिक खेती योजना के बारे अवगत करवाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. जे.पी. मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान समय में खेती में फसल उत्पादन के लिए अधिकतम रसायनों का प्रयोग हो रहा है, जिससे मिट्टी, जल एवं वायु प्रदूषण होने के साथ-साथ फसल उत्पादकता भी कम होने लगी है एवं रसायनों के अधिक प्रयोग से रसायनों का अंश उत्पादों में अधिक मात्रा में आने लगा है, जिससे मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए वर्तमान समय में प्राकृतिक खेती एवं उत्पाद की आवश्यकता है। डॉ. मिश्रा ने प्रगतिशील किसानों

से आह्वान किया कि कृषि विज्ञान केन्द्र एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों के द्वारा विकसित उन्नत तकनीको को सीखकर इसे अधिक से अधिक किसानों तक प्रसार एवं जागरुक करें। उन्होंने बताया कि दिल्ली जैसे महानगर में किसानों को बाजार उपलब्ध होने की वजह से प्राकृतिक उत्पाद की बिक्री में कोई दिक्कत नहीं होगी सांथ ही अच्छी कीमत लेकर आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। इस दौरान डॉ. मिश्रा ने प्रशिक्षुओं से आग्रह किया कि आप केन्द्र से प्रशिक्षित होने

के पश्चात् अपने क्षेत्र में स्वरोजगार स्थापित करके देश के ग्रामीण क्षेत्र को फिर से आत्म निर्भर बनाने में योगदान दे सकेगें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. बृजेन्द्र सिंह ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि यहां से प्रशिक्षित युवा किसान एवं महिला उधमी अगर ईमानदारी से अपने लग्न एवं गुणवत्तायुक्त उत्पाद तैयार करके उपभोक्ता को सीधा बिक्री करके अच्छी आय प्राप्त कर सकते है, लेकिन इसके लिए आपको उत्पाद में गुणवता एवं उपभोक्ता में विश्वास लाना होगा, इस संदर्भ में उन्होनें केन्द्र के द्वारा प्रशिक्षित सफल उधमियों का उदाहरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों के द्वारा वैज्ञानिक बकरी पालन के प्रशिक्षित प्रशिक्षुओं को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

कार्यक्रम में डॉ. समर पाल सिंह, विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) ने बताया कि प्राकृतिक खेती देसी गौ-आधारित खेती है, जिसमें गोबर, गोमूत्र, धी दूध एवं दही आदि प्राकृतिक उत्पाद बनाने में प्रयोग होता हैं। इसी के साथ प्राकृतिक विधि द्वारा फसल उत्पादन की विभिन्न तकनीकियों के बारे में जानकारी दी एवं प्राकृतिक खेती के प्रमुख अवयवः जीवामृत, पंचगव्य, बीजामृत, धनजीवामृत एवं नीमास्त्र आदि के बनाने की विधियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाई। कार्यक्रम के समापन में डॉ. राकेश कुमार ने कार्यक्रम में सम्मिलित सभी गणमान्य अतिथियों एवं किसानों, उधमियों एवं मिडियाकर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यकम के दौरान माननीय अतिथियों ने केन्द्र के प्रशिक्षित उधमियों की प्रदर्शनी देखी एवं केन्द्र के कार्यो की सहारना की। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कृषि विज्ञान केंद्र की सभी वैज्ञानिकगण एवं अधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने भागीदारी की।

****